अनुतिष्ठन्ति=विधिवत् पालन करते हैं; **मानवाः**=मनुष्य; **श्रद्धावन्तः**=श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर; **अनसूयन्तः**=ईर्ष्या से रहित; **मुच्यन्ते**=मुक्त हो जाते हैं; **ते**=वे सब; **अपि**=भी; **कर्मभिः**=कर्मबन्धन से।

अनुवाद

जो पुरुष मेरे आदेश के अनुसार स्वधर्म का आचरण करते हुए ईर्ष्या से मुक्त रहकर श्रद्धाभाव से मेरी इस शिक्षा का पालन करते हैं, वे कर्मबन्धन से मुक्त हो जाते हैं।।३१।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण की आज्ञा सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान का परम सार और सार्वभौम शाश्वत् सत्य है। जैसे वेद शाश्वत् हैं, उसी भाँति कृष्णभावना का यह सत्य भी शाश्वत् है। भगवान् की इस आज्ञा को द्वेषबुद्धि से मुक्त होकर प्रगाढ़ श्रद्धा सहित धारण करे। ऐसे अनेक दार्शनिक हैं, जो भगवद्गीता पर भाष्य रचते हैं, परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण में उनका कोई विश्वास नहीं है। वे कर्मबन्धन से कदापि मुक्त नहीं हो सकते। इसके विपरीत वह साधारण मनुष्य जो शाश्वत् भगवत्-आज्ञा में अटूट श्रद्धा रखता है, चाहे इसका पालन न भी कर सके, वह कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। यह सम्भव है कि कृष्णभावना के पथ पर प्रवेश करते समय श्रीभगवान् के आदेश का पूर्ण रूप से पालन न हो सके। परन्तु जो पुरुष इस सिद्धान्त का विरोध नहीं करता, अपितु हानि अथवा निराशा की चिन्ता किये बिना साधन में तत्पर रहता है, वह अतिशीघ्र विशुद्ध कृष्णभावनामृत के स्तर पर आरूढ़ हो जाता है।

16/3

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः।।३२।।

ये=जो; **तु**=परन्तु; **एतत्**=इस; **अभ्यसूयन्तः**=द्वेष करने वाले; **न**=नहीं; **अनुतिष्ठन्ति**=नित्य आचरण करते; **मे मतम्**=मेरे आदेश का; **सर्वज्ञान**=सम्पूर्ण ज्ञान में; **विमूढान्**=पूर्णतया भ्रमित; **तान्**=उन्हें; **विद्धि**=जान; **नष्टान्**=नष्ट हुए; **अचेतसः**=कृष्णभावनाशून्य।

अनुवाद

परन्तु जो द्वेष के कारण मेरे इस उपदेश की उपेक्षा करते हैं, अर्थात् नित्य-निरन्तर इसका पालन नहीं करते, उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान से शून्य, भ्रान्त तथा अज्ञान और बन्धन से भ्रष्ट हुआ जानना चाहिए।।३२।।

तात्पर्य

इस श्लोक में कृष्णभावनाभावित न होने के दोष को स्पष्ट किया गया है। राज-अवज्ञा के समान भगवत्-आज्ञा के उल्लंघन का दण्ड भी अवश्यमेव भोगना होगा। अवज्ञाकारी बड़े से बड़ा कोई भी क्यों न हो, हृदयशून्यता के कारण उसे अपना स्वरूप और परब्रह्म, परमात्मा एवं श्रीभगवान् का तत्त्व भी अज्ञात रहता है। अतएव उसके लिए जीवन की सार्थकता की कोई आशा नहीं हो सकती।